अध्याय बाइस

डॉ. उषा वर्मा

[डॉ. उषा वर्मा के जनम सीवान जिला के महमूदपुर गाँव में भइल । एह घड़ी इहाँ के जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा में हिंदी विभाग के अध्यक्ष बानी । इहाँ के भोजपुरी आ हिंदी दूनों में लेखन करीले । इहाँ के प्रकाशित किताबन के नाँव बा- लाइची (कहानी संग्रह), अंकुर (निबंध संग्रह) । कहानी संग्रह 'लाइची' पर अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के पुरस्कार मिलल बा । 'काकी के गहना' में मेहरारू के दुःख भरल जिनगी के कथा कहल गइल बा ।]

काकी के गहना

काकी के गहना के बड़ा सोर रहे । गाँव-त-गाँव ओह जवार में इनका अइसन पाँच सेर सोना आ दस सेर चानी के गहना केहू के ना रहे । बिआहो भइल रहे बहुते धूमधाम से । तीन भाई के पीठ पर के तेंतर दुलारी बहिन रहली । बाबूजी अपना जमाना

के नामी-गिरामी मोख्तार रहनी । खूब नाँव, जस आ धन कमइले रहनी । अपनो से बड़हन घर में बेटी के बिआह कइनी । जेतने बड़हन घर ओतने सुन्नर बर । दुआर पर बरिआत लागल त बर देख के काकी के माई-त-माई गाँव भर के मन जुड़ा गइल । जे देखे ओकरे मुँह से अनासे निकल जाव- "वाह लइका त लइके बा- ।" लंबा-चौड़ा, गोरा चिट्टा, बड़-बड़ आँख आ चमकत लिलार । जे देखे देखते रह जाव ।

लइकी के बिआह में सराती मेहरारू लोग दूइए गो चीज देखे खातिर बेसी मड़राला-दुअरा पर बर आ आँगना में गहना । काकी के गहना बेजोड़ चढ़ल रहे । गुरहेत्थी क के भसुर के अँगना से जाते-जात गाँव के मेहरारू गहना देखे खातिर झूक गइली । का बूढ़, का जवान, का बिअहल आ का कुँआर- सभकर आँख चौंधिया गइल । बुझाव, जइसे मड़वा में कवनो राजा-महराजा के खजाना खुलल बा । पीअर दग-दग सोना के भारी-भारी किसिम-किसिम के गहना देख के लोग दाँते अँगुरी काटे लागल । सोरह थान त अकेले हाथ के रहे । कँगना, पहुँची, बाला, ब्रेसलेट, बाजूबंद, हाथ-सिकड़ आ दसो अँगुरी के खानी बिखानी के अँगूठी । छह थान गला के रहे- कंठा, हँसुली, सीताहार, चीक, असरफी लागल पाँच लड़ी के सिकड़ी आ

बड़हन लाकेट के चेन । कानो के उहे हाल रहे- इयरिंग, झुमका, कनफूल, बाली, तरकी । नाक के नथिया, छूँछी, झुलनी । माथ पर के टीका, टैरा, झपटा, बननी । ताग-पाट ढोलन में खूब सुन्दर बड़हन नक्कासीदार ढोलना लागल रहे । हलुक-पातर त कवनो रहबे ना कइल । किसिम-किसिम के, भारी-भारी आ खूबे नक्कासीदार । चानी के गहना त ओहू से भारी-भारी रहे । दू जोड़ी पावजेब, झाँझ, छाड़ा, गोड़ाई, चार जोड़ी पायल आ दस जोड़ी बिछिया । सात लर के भर डाँड़ के डाँड़ा । काकी के ससुर बहुते शौखीन आदमी रहलन । धनो-दौलत अफरात रहे । वकालत के पइसा रहे । औलाद दू गो आ उहो बेटे । पहिलौंठी के बेटा के बिआह रहे । सब सरधा पुरा लेबे के रहे । बेटा के महतारी चार साल पहिलहीं गुजर गइल रहली । उनको अरमान के इयाद रहे । आपनो सुभाव साहखर्चे रहे । एह से खर्चा करे में कवनो तरह के कोताही ना भइल । असली बात रहे पइसा । कहल न जाला -''दरबे से सरबे, जे चहबे से करबे ।'' धन के बदौलत जे-जे चहलन से-से कइलन । साल भर पहिलहीं से दूआर पर सोनार बइठा के गहना बनवावल गइल । कुछ गहना कटक से आइल ।

जे हाल बर के देख के सराती लोग के भइल रहे, उहे हाल कनिया के देख के बेटहा किहाँ भइल । जे-जे सोहागिन

डोली में कनिया के माँग बहोरे गइली, उनका रूप पर मोहा गइली आ बखान करत अइली ।

"एकदम मोम के गुड़िया बाड़ी ।"

"सीता त सीते बाड़ी । बड़ा सोच-समझ के इनकर महतारी बाप इनकर नाँव सीता धइले बा ।"

"भगवान खूबे जोड़ी मिलवले बाड़न ।"

बाकिर भगवान त कुछ दोसरे सोचले रहलन । अबहीं सालो ना लागल रहे कि अचानक एक घंटा के बेरामी में सब उलट-पुलट गइल । वकील साहब पर गाज गिरल । बड़ बेटा के शोक में खटिया ध लिहलन । काल्ह के कनियाँ, आज कुलच्छनी कहाये लगली । गाँव के सोहागिन मेहरारू लोग त उनका नाँवें से परहेज करे लागल । बाकिर, ऊ एकदम पथरा गइल रहली । केहू कुछो बोले, ऊ खाली टुकुर-टुकुर ताकत रहस । महीना भर बाद उनकर बाबूजी अइलन आ अपना बेटी के अपना साथे ले जाये के बात चलवलन । पटी-पटिदार भा गाँव-घर के लोग जे बोलले होखे, उनकर ससुर उनका के कबहूँ कवनो कुबोल ना बोललन । नइहर जाये लगली त अपना सामने उनकर सब बक्सा पेटी गाड़ी पर लदवा के समधी से एतने कहलन -"अबहीं त हम राउर बात मान लेत बानी । साइत, इहे ठीक बा एह घड़ी इनका खातिर ।

बाकिर, इनकर घर इहे बा । जब चाहस आवस, रहस ।'' एतना कहत-कहत उनकर गला भर आइल । आँख से झर-झर लोर झरे लागल । दूनो समधी एक दोसरा के अँकवारी में भर के खूब रोअल लोग ।

नइहर में माई इनका के देख के एतना रोअली जेतना इनका बिदाइयो बेरा ना रोअले रहली । भउजाई लोग अपना आँचरा से इनकर लोर पोंछल । पहिले से अधिका दुलार होखे लागल । भाई लोग घर में घुसते पहिले बहिने के खोजे । परब-त्योहार में सबसे पहिले इनकरे कपड़ा किनाव । भतीजा-भतीजी इनके भिरी सटल रह सन । छोटकी भउजी के इनका अइला के साल भीतरे बेटा भइल । केहू ना कहत रहे कि ऊ औलाद के मुँह देखिहन । बिआह के पाँच बरिस बीत गइल रहे । ससुरा के कुलच्छनी, नइहर में सुलच्छनी कहाये लगली । गाँव में केहू के बिआह होखे एक बेर इनका गहना के बात जरूर चले । असहीं गाँव के एगो बिआहे के बात चलत रहल कि छोटकी भउजी पूछ देहली -''बबुनी आपन सब गहना ले आइल बानी कि ओहिजे बा ?''

''आइल बा'' कह के ई दूअरा जाये लगली । जात-जात भउजी पर नजर पड़ गइल । उनकर आँख सीसा लेखान चमकत

रहे ।

गँवे-गँवे नइहर के घर गिरहस्थी के भार इनके पर आ गइल । तीनों भउजाई अपना-अपना सिंगार-पटार पर आ बाल-बच्चन में अझुराइल रहे लोग । इहे छुट्टा देह लउकस । घर से ले के आदमी जन ले सभे कवनो काम खातिर इनहीं के खोजे । इहो दिन-भर अझुराइल रहस काम-धाम में । सभकर सुध राखस बाकिर आपने सुध ना रहे । ना खाये पिये के धेयान आ ना पेन्हें ओढ़े के चाव । इहाँ तक ले कि अपना बक्सा-पेटी के चाभिओ छोटकी भउजी के सऊँप देले रहली । सउँपली का, एक दिन छोटकी भउजिये कहली -"आदमी जन के घर बा आ रउरा अपना बक्सा पेटी के सुधे ना रहे । जानते बानी कि जवार-भर में राउर गहना के सोर बा । दीं आपन गहना वाला बक्सा के चाभी, हम अपना आलमारी में रख दीं । जब जरूरत होखे ले लेब ।" ओही दिने एगो पेटी में सब गहना सरिया के ताला बंद कइली आ ओकर चाभी छोटकी भउजी के दे दिहली ।

ओह चाभी के छोटकी भउजी के आलमारी में जात भइल कि तीनों भाई-भउजाई में मन मोटाव शुरू हो गइल । बिन बातो के बात झगड़ा होखे लागल । बात एतना बढ़ल कि एक अँगना में तीन गो चूल्हा जरे लागल । माई-बाबूजी के धोबी के कुत्ता के

हाल हो गइल- ना घर के ना घाट के । देखते-देखते दूनो जना कौड़ी-कौड़ी के मोहताज हो गइल लोग । दू जून के रोटी खातिर कबो बड़का के त कबो मझिला के त कबो छोटकू के दुआरी सेवे के पड़े लागल । बाकिर ई का करस ? कहाँ जास ? छोटकी भउजी के सेवा टहल में भर दिन लागल रहस । भाई-भउजाई के आँख त बदलिये गइल रहे । भर-भर दिन खटलो पर ओ लोग के आँख में ई बइठले लउकस आ इनकर नीमनो काम में उनका खोटे लउके । एकदम साँप-छुछुन्दर के गति हो गइल रहे । ना बुझाव कि का करस, कहाँ जास । रह-रह के ससुर के कहल बात मन पड़े..... "इहे इनकर घर बा । जब चाहस, आवस, रहस ।" बाकिर, जास कइसे ? कवन मुँह से ? देवर के बिआह में खबर आइल । ना गइली । जाउत के जनम में खबर आइल । ना गइली । इहाँ तक ले कि ससुर गुजर गइलन । ना गइली ।

बारह बरिस पर घूरो के दिन पलटेला । भगवान पासा पलटलन । देवर के बेटा के जनेव के नेवता आइल । देवर के चिट्ठी के साथे-साथे जाउतो के हाथ के लिखल एक लाइन के चिट्ठी रहल -"काकी के मालूम कि तू जरूर अइह ।" डूबत के तिनका के सहारा मिल गइल । का जाने 'काकी' सबद के कमाल रहे कि नइहर से अगुताइल मन के छटपटाहट - जाये खातिर तुरते

तइयार हो गइली । सभका से कहत फिरस –"जाउता बोलवले बाड़न –"काकी के मालूम कि तू जरूर अइह ।" "जायब जरूर ।" सभे चकित । काकी निहाल । जाये के तइयारी में छोटकी भउजी से अपना गहना वाला पेटी के चाभी मँगली । भउजी उठली आ घुमा के फेंक देहली ।

"जाई !" बड़ा अगराइल बानी । ऊ लोग त जइसे पलंग पर बइठा के खिआई ।"

टूटल मन बेजुबान बना देला । चुपचाप चाभी उठा के आपन पेटी खोललीं । एतना दिन के बाद जात बानी । देआदिन के मुँहों मइखीं देखले । ना जाउते के देखले बानी । ओतना गहना बा । ओही में से देआदिन के मुँह देखाई दे देब । जाउत के जनेव में नेग देब । बाकिर ई का ? पेटी में गहना के डिब्बा त सब बा बाकिर सब के सब खाली । छोटकी भउजी के चाभी देबे से पहिले सब गहना रहे फिर भइल का ? घबराइले गइली छोटकी भउजी लगे ।

"छोटकी भउजी ! ई का भइल ?"

"काऽ ?" भउजी गभुआइले बोली ।

"पेटी में गहना के सब डिब्बा खाली बा ।"

"त हम का जानी ? चाभी सहेजला गुने अछरंग लगावत

बानी ?''

''ना भउजी, अछरंग के बात नइखे । चाभी देबे के पहिले हम देखले रहनी । सब गहना रहे ।''

''त हम चोरा लेहनी का ?'' भउजी चिल्ला के बोललीं । का जाने का सोच के ई लपक के उनका मुँह पर हाथ ध दिहली । ''बस-बस भउजी, अब चुप हो जाई । ई बात हमरे रउरा ले रही । भइया किरिया, जे रउरा केहू से कुछ कहीं ।'' भउजी हकबका के ताके लगली ।

दोसरा दिने भोरे-भोरे ससुरा जाये खातिर टायर गाड़ी पर आपन सब बक्सा पेटी लदवा के बइठ गइली । छोटका भाई चहुँपावे गइलन ।

ससुरा में देवर-देवरानी हाथो-हाथ लिहलस । ''काकी-काकी'' कह के दस बरिस के जाउत अइसन सटलन कि बुझाव, कहिया के जान पहिचान बा । देवरानी कहस -''इहे नू आपन खून कहाला । दीदी जी ! तनिको बुझाता कि गुंजन रउरा के पहिले पहिल देखत बाड़न ?'' 'काकी-काकी' सुन के काकी जुड़ा गइली । जइसे सब दुख सिरा गइल । जाउत में अइसन अझुरइली जइसे इनके लइका होखस । संगही खाइल । संगही सूतल । काकी से बे कथा कहानी सुनले गुंजन ना खास ना

सूतस । देर रात ले बतकही होखे काकी-गुंजन में । ओह रात के कुकुर बड़ा बोलत रहे । बतकही करते-करते गुंजन काकी के गोदी में तनी आउरो समा के पूछ देहलन -"काकी ! तोहरा पाले बहुते गहना बा का ?" काकी के त जइसे बिच्छी मरले होखे । छपटा के पूछली -"के कहेला बाबू ?" "माई-बाबूजी कहेला लोग । एही खातिर त तोहरा के बोलावल गइल ह । काल्हे माई, बाबूजी से कहत रहली कि बहुत दिन बाद पकड़ाइल बाड़ी । अबकी सब गहना गुंजन के दे देस, तब नइहर जास । हमरा के देबू नू काकी सब गहना ?" जवाब ना सुन के गुंजन छरिया गइलन । काकी के झोर-झोर के पूछे लगलन -"काकी ! काकी ! बोलऽ ना । देबू नू हमरा के सब गहना ?" काकी जइसे इनार में से बोललीं -"हँ, देब ! दे देब सब गहना ।" उनकर साँस फूले लागल । पूस के महीना में पसीना से नहा गइली । तबे से बेराम बाड़ी । जब-तब साँस फूले लागेला । खाँसते-खाँसते सुरसुरी चढ़ जाला । पसीना छूटे लागेला । खात में अकसरहाँ सरक जाला । बाकिर अपना बक्सा-पेटी के चाभी हरमेसा खूब गँठिया के अपना अँचरा के खूँटा में बन्हले रहेली ।

●

अभ्यास

बहुविकल्पी/वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'काकी के गहना' कवना विधा के रचना ह ?

   (क) कहानी (ख) निबंध

   (ग) रेखाचित्र (घ) आत्मकथा

2. डॉ. उषा वर्मा के जनम कवना जिला में भइल ?

   (क) छपरा (ख) सीवान

   (ग) रोहतास (घ) भभुआ

3. डॉ. उषा वर्मा के कहानी-संग्रह के का नाँव ह ?

   (क) लाइची (ख) धुँआ

   (ग) काकी के गहना (घ) कवनो ना

4. बिआह के साले भर के भीतर का भइल ?

5. काकी दोबारा कब ससुरा गइली ?

अति लघुउत्तरीय प्रश्न

1. लेखिका के छोटहन परिचय लिखीं ।

2. लइकी के बिआह में सराती मेहरारू लोग का देखे खातिर आवेला ?

3. काकी के गहना के आ कइसे बनवावले रहे ?
4. चले के बेरा ससुर का कहले रहस ?
5. काकी के गहना के चखोरा लेहल ?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'काकी के गहना' कहानी के सारांश लिखीं ।
2. पठित कहानी में मेहरारू के दुःख भरल कथा कहल गइल बा । एह कथन के समीक्षा करीं ।

परियोजना कार्य

1. पुरनका ढंग के बनल गहना के नाँव लिखीं आ बताईं कि ऊ सब कवना अंग में पेन्हल जाय आ कवना धातु के बनत रहे ?